SS – 118

III Semester B.Sc. Examination, November/December 2018
(Repeaters) (2014-15 Only)
HINDI LANGUAGE – III
Hindi Natak, Sahityakar Aur Sankshepan

Time : 3 Hours | Max. Marks : 100

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर **एक** शब्द या **वाक्य** में लिखिए : **(10×1=10)**

1) चाणक्य के बचपन का नाम क्या था ?

2) मगध का सम्राट कौन था ?

3) कोपल की पत्नी का नाम क्या था ?

4) शूद्र युवक को रथ चक्र के नीचे किसने कुचला ?

5) विद्यापीठ किसकी कृपा पर जीवित है ?

6) निरंकुशता का विरोध करने के लिए किसकी आवश्यकता होती है ?

7) चाणक्य किससे घृणा करता था ?

8) क्या कहकर हम प्रजा के एक बड़े हिस्से को नहीं नकार सकते ?

9) रुद्रसेन के पिता कौन थे ?

10) "चाणक्य और चाणक्य" नाटक के नाटककार कौन हैं ?

II. किन्हीं **तीन** अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **(3×8=24)**

1) "नहीं... मेरे गले मत लगो, तुम्हारी प्रतिष्ठा नष्ट हो जायेगी, मेरे मित्र ! तुम आर्यवर्त के महानतम व्यक्ति होकर गलियों में टुकड़ों के लिए भटकते पागल के गले न लगो।"

2) "मेरे जैसा व्यक्ति जीवन को आँधी समझकर जीता है, उसे नहीं पता कि आँधी जीवन का एक टुकडा है।"

3) "जब तक मैं एक साम्राज्य के निर्माण में लगा था तब तक वह निर्माण ही मेरे लिए सबसे बड़ा सच था।"

4) "देवी जो हुआ उसमें हम सब आपके साथ दु:खी हैं और युवराज की रक्षा का वचन देते हैं ।"

5) "हमारे चारों ओर शक, हूण, यवन घात लगाए बैठे हैं। ऐसे में साम्राज्य को एकता और अखण्डता की आवश्यकता है।"

P.T.O.

BMSCW

III. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×16=32)

1) ''चाणक्य और चाणक्य'' नाटक की कथावस्तु लिखकर चाणक्य का चरित्र स्पष्ट कीजिए।

2) ''धर्म, जाति, वर्ण, मान्यताएँ सब कुछ मानव से छोटा है'' – ''चाणक्य और चाणक्य'' नाटक के आधार पर इस कथन की पुष्टी कीजिए।

3) तत्वों के आधार पर ''चाणक्य और चाणक्य'' नाटक की समीक्षा कीजिए।

IV. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (2×7=14)

1) अपराधी।

2) विष्णु।

3) कोपल।

BMSCW

V. किसी **एक** साहित्यकार का परिचय दीजिए : (1×10=10)

1) महादेवी वर्मा।

2) सूरदास।

VI. निम्नलिखित अवतरण का शीर्षक देते हुए **एक तिहाई** शब्दों में संक्षेपण कीजिए : 10

कहा जाता है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है । ज्यों-ज्यों मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ती जाती है त्यों-त्यों मनुष्य उसकी पूर्ति के लिए तरह-तरह के नये उपाय सोचता है। तभी नए-नए आविष्कार होते हैं। इसीलिए वर्तमान युग को वैज्ञानिक युग कहा जाता है । आज के वैज्ञानिक युग में जितने आविष्कार हुए हैं उतने कभी नहीं हुए। प्राचीन काल और मध्य काल में मनुष्यों की दृष्टि भौतिक उन्नति की ओर उतनी नहीं थी, जितनी पारलौकिक उन्नति की ओर। इसीलिए उन्होंने पारलौकिक विषयों की ओर ध्यान दिया और धर्मशास्त्रों की सृष्टि की। आधुनिक युग में भौतिक समृद्धि की इच्छा के कारण भौतिक विज्ञानों की उन्नति हुई। प्राचीन काल में मनुष्यों का जीवन बड़ा ही सरल था । भोजन और वस्त्र को छोड़कर वे अन्य वस्तुओं की आवश्यकता का कम अनुभव करते थे ।